भारतीय संस्कृति की विश्व को उपादेयता

डॉ. सी. पी. गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास
शासकीय बापू महाविद्यालय, नौगांव
जिला- छतरपुर मध्य प्रदेश
मो. नं : 7974824218
ई-मेल : chandrapal.gupta@yahoo.com

सारांश :

*भारत अनादिकाल से ही **'जियो और जीने दो'** की विचारधारा पर आचरण करता आ रहा है और दूसरों से भी यही अपेक्षा रखता रहा है। भारत के विश्व गुरु होने का यह दायित्वबोध भी है, और आगे बढ़ने का मार्ग भी, इसी विचारधारा के कारण भारत विश्व के सबसे संपन्न राष्ट्र के रूप में जाना जाता रहा है और उसे विश्व के अनेक विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा **सोने की चिड़िया** के संबोधन से अलंकृत किया जाता रहा है। आज जैसा कि हम सब जानते हैं कि विश्व के बड़े-बड़े देश धन संपदा अर्जित करने के उपरांत बड़ी-बड़ी सेनाएं रखने और अस्त्र-शस्त्रों का जखीरा खड़ा करने में मस्त हैं, इनमें से केई देश तो अपने नागरिकों को मूलभूत सुविधा भी उपलब्ध नहीं करा पा रहे हैं। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) की विगत 2024 की रिपोर्ट के आधार पर यह आंकड़े सामने आए हैं कि संपूर्ण विश्व अपने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 2.5 प्रतिशत अपनी रक्षा जरूरतों में खर्च कर रहा है। यदि यही राशि अशिक्षा, भुखमरी, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण पर खर्च किया जाए तो हम ना केवल जियो और जीने दो के जीवन मंत्र की तरफ लौटेंगे बल्कि अपने आने वाली पीढ़ियों को भी जीने के लिए उपयोगी आदर्श ग्रह के रूप में उपहार दे सकेंगे। भारत का दुनिया के राष्ट्रों से यही आग्रह है कि वे अपनी रक्षा जरूरतों का न्यूनीकरण करते हुए मानवता और प्रकृति के कल्याण पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करें और आज भारत की बढ़ती हुई शक्ति दुनिया को ऐसा करने और सोचने के लिए प्रेरित कर रही है।*

कुंजी शब्द : प्रकृति, संरक्षण, ज्ञान अर्थव्यवस्था, विश्व गुरु, भारतीय ज्ञान प्रणाली, उपादेयता, दायित्वबोध आदि।

प्रस्तावना :

'जियो और जीने दो' केवल उक्ति नहीं है, यह तो भारत का जीवन मंत्र है, जो अनादि काल से भारतीयों के आचरण में अन्तर्निहित रहा है, जिसे वह अपना धर्म, कर्म और मंत्र मानकर विश्वास करता रहा है, जिसे विदेशियों ने भारत की कमजोरी समझा और इसी के परिणामस्वरूप भारत को विश्व के अनेक आक्रमणकारी देशों और आक्रांताओं के आक्रमण का शिकार होना पड़ा, जबकि भारत ने सामर्थ्यवान होते हुए भी किसी दूसरे की भूमि, धन या स्त्री पर अधिकार करने का विचार अपने मन मस्तिष्क में नहीं आने दिया। भारतीय ज्ञान प्रणाली और भारतीय धर्म साहित्य इस बात के साक्षी हैं कि त्रेता युग में राम ने जब रावण का बंध कर दिया, तत्पश्चात विभीषण तथा लंका

के अनेक प्रवुद्ध मंत्रियों द्वारा राम से लंका में राज्य करने का आग्रह किया गया, तब राम ने लक्ष्मण को संबोधित करते हुए कहा था कि-

अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

अर्थात लक्ष्मण यह सच है कि यह लंका सोने की बनी हुई है, किंतु इस सोने की लंका में मेरी कोई रुचि नहीं है, क्योंकि अपनी मां और जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक महान और गौरवशाली होती हैं। उन्होंने इस विश्व प्रसिद्ध उक्ति से सभी को निरुत्तर कर दिया था। बिना अवसर मिले लालची ना होना अलग बात है, और अवसर मिलने पर भी लालच ना आना दूसरी बात है, भारतीय वांग्मय के नायकों की हमेशा यही पहचान रही है। हम जानते हैं कि भगवान राम ने रावण का वध अपने निजी स्वार्थ, स्वर्ण और साम्राज्य के लिए नहीं किया था, बल्कि उसके अहंकार, अनीतियों, नारी जाति के सम्मान व गरिमा को अक्षुण्ण रखने और विश्व के समस्त श्रेष्ठ जनों की भलाई के लिए किया था। उनहोंने कहा भी था कि लंका में मेरा नहीं बल्कि रावण के भाई विभीषण का ही अधिकार न्यायोचित है, जो एक पिता के समान अपनी प्रजा का ना केवल पालन पोषण करेंगे बल्कि उसे नैतिक आचरण पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए संसार की समस्त नारी जाति का सम्मान करेंगे।

भारतीय ज्ञान परंपरा के श्रुति तथा स्मृति साहित्य इस बात के सैकड़ों उदाहरणों से भरे पड़े हैं जब किसी वीर पुरुष ने किसी नारी, गाय तथा विद्वानों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की परवाह किए बिना जोखिम उठाए हैं। भारत के महान मौर्य सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध से अपने शत्रुओं को तो दहला दिया, किंतु वह स्वयं युद्ध की विभीषिका से विरक्त हो गया और अपनी शक्ति का प्रयोग कभी किसी पड़ोसी या विदेशी राष्ट्र को नष्ट-भ्रष्ट करने या लूटने के लिए नहीं किया, बल्कि अपनी पुत्रवत प्रजा और अधिकारियों को धम्म की शिक्षा देने के लिए किया, और उनके नैतिक चरित्र को उज्ज्वल किया। इसी प्रकार दूसरी शताब्दी में भारत ने बृहतर भारत का निर्माण किया और अपने पड़ोसी राज्यों में भारतीय धर्म, संस्कृति और व्यापार का प्रचार प्रसार किया, जिसे आगे बढ़ाने का कार्य दक्षिण भारत के महान चोल सम्राटों ने किया। भारत ने दक्षिण पूर्व एशिया के अनेक राज्यों यथा जावा, सुमात्रा, बाली, बोर्नियो, इंडोनेशिया और चीन आदि में अपने व्यापार, धर्म और संस्कृति का प्रचार-प्रसार सहिष्णुता के साथ किया, ना कि बल प्रयोग द्वारा। भारत ने वहां के लोगों को लूटने का कार्य कभी नहीं किया और ना ही वहां के लोगों का बलात धर्मांतरण कराया। भारत सदैव ही, क्षमा बड़ों को चाहिए छोटों को उत्पात की नीति पर विश्वास करता रहा है।

प्राचीन काल में भारत अपनी उदात्त व कौशलयुक्त शिक्षा, उदार और सहिष्णुतावादी नीतियों के आधार पर ही सोने की चिड़िया और विश्व गुरु बनने में सफल रहा था। भारत ने कभी भी किसी राष्ट्र को शस्त्रों से नहीं बल्कि अपने शास्त्रों में वर्णित शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, धर्म और संस्कृति की **विश्व उपादेयता** और स्वीकार्यता के आधार पर जीतने की कोशिश की, अर्थात भारत अनादि काल से ही धन नहीं बल्कि मन जीतने पर विश्वास करता रहा है, तभी वह लंबे समय तक विश्व गुरु के सम्माननीय ओहदे पर विराजमान रहा और सभी को जियो और जीने दो के विचार से अनुप्राणित करता रहा है।

चीन के महान बौद्ध विद्वान और दार्शनिक **हू शिह (Hu Shih)** ने भी 1930 के दशक में **'दी इंडियनाइजेशन आफ चाइना: ए केस स्टडी आफ कल्चरल बोरोविंग'** ('The Indianisation of China:

A Case Study of Cultural Borrowing') नामक लेख लिखा जिसमें उन्होंने स्वीकार किया था कि- **"भारत ने अपनी सीमा के पार एक भी सैनिक भेजे बिना 20 शताब्दियों तक चीन पर सांस्कृतिक रूप से विजय प्राप्त की।"** ("India conquered and dominated China culturally for 20 centuries without ever having to send a single soldier across her border") उक्त विचार भारत और चीन के सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विशेष रूप से बौद्ध धर्म के चीन में प्रचार प्रसार पर आधारित था, किंतु वास्तविकता यह है कि भारत का उक्त प्रचार-प्रसार संपूर्ण दक्षिण पूर्व एशिया अर्थात वृहत्तर भारत में देखा जा सकता था। उक्त लेख को 1937 ई० में Harvard University Press के "Harvard Tercentenary Publications" (East-West, Part 3) के अंतर्गत भी प्रकाशित किया गया था।

सन् 1936 ई. में हार्वर्ड विश्वविद्यालय द्वारा अपनी स्थापना के 300 वर्ष पूरे होने पर एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठि आयोजित की गई उसमें भी चीन के महान बौद्ध विद्वान और दार्शनिक **हू शिह (Hu Shih)** ने स्वीकार किया था कि भारत ने अपनी सीमा के पार एक भी सैनिक भेजे बिना भी शताब्दियों तक चीन पर सांस्कृतिक रूप से विजय प्राप्त की जो भारतीय संस्कृति कि विश्व उपादेयता का बहुत ही प्रबल विदेशी उदाहरण माना जाता है। उक्त कथन भारत और उसके पड़ोसी तथा वर्तमान में रिश्तों की खटास-मिठास से भरे भारत-चीनी रिश्तों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों की ऐतिहासिकता और महत्व को परिभाषित करता है। वास्तव में **हार्वर्ड विश्वविद्यालय का हार्वर्ड टरसेन्टेनेरी कार्यक्रम 1936** का मूल उद्देश्य आधुनिक विश्व में शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान, विज्ञान और दर्शन की विभिन्न देशों की संस्कृतियों की उपादेयता और स्वीकार्यता के मंथन पर आधारित था और इस मंथन से निकले वैचारिक रत्न को हार्वर्ड टरसेन्टेनेरी पब्लिकेशन में प्रकाशित किया गया था।

बदली हुई परिस्थितियों में आज विश्व का कोई भी राष्ट्र आर्थिक रूप से जैसे ही संपन्न होता है उसके मन मस्तिष्क में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विचार हिलोरें मारने लगते हैं। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में औद्योगिक क्रांति से धनाढ्य हुए इंग्लैंड ने उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की एक ऐसी प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया जो सीधे मानव जाति को प्रथम और द्वितीय महायुद्ध की ओर ले गए। इसी प्रकार द्वितीय महायुद्ध की बदली हुई परिस्थितियों में जब संयुक्त राज्य अमेरिका और पूर्व सोवियत संघ आर्थिक और सैनिक रूप से शक्तिशाली हुए, तो उन्होंने संपूर्ण विश्व को दो ध्रुवों में बांटकर एक ऐसे शीत युद्ध को जन्म दिया, जहां प्रत्येक राष्ट्र के दरवाजे में युद्ध सदैव दस्तक देता हुआ नजर आ रहा था, शांति और सुरक्षा दोनों सदैव सशंकित बने हुए थे। वर्तमान में भी रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन की आर्थिक संपन्नता और सैन्य सामर्थ्य ने विश्व के अनेक राष्ट्रों में बेचैनी पैदा कर रखी है, इसीलिए विश्व के लगभग सभी राष्ट्र सैन्य रक्षा बजट बढ़ाने में एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं और किसी भी राष्ट्र को अपने दायित्व का बोध नहीं है। जिसके परिणामस्वरूप रूस-यूक्रेन युद्ध, ईरान-इजरायल युद्ध, कंबोडिया-थाईलैंड सीमा विवाद, अमेरिका की ग्रीनलैंड में दिलचस्पी आदि देखें जा सकते हैं।

स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) की विगत 2024 की रिपोर्ट के आधार पर जो आंकड़े सामने आए हैं, उसके आधार पर भी इसकी पुष्टि होती है। आज संपूर्ण विश्व अपने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 2.5 प्रतिशत अपनी रक्षा जरूरतों में खर्च कर रहा है। यदि इन राष्ट्रों को अपने मानवीय दायित्वों का जरा भी ख्याल होता तो वे इस धन का उपयोग संपूर्ण मानव जाति के मध्य फैली अशिक्षा, भुखमरी,

आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण पर खर्च करते, जिससे अशांति और युद्ध के स्थान पर **जियो और जीने दो** का विचार दिखाई देता।

आज समय आ गया है कि भारत के अतीत के उस गौरवशाली विचार से प्रतिस्पर्धा हो जब भारत ने शक्तिशाली और सामर्थ्यवान विश्व गुरु के दायित्व और उपादेयता के भाव का निर्वहन किया था, और बल प्रयोग के स्थान पर जनकल्याण का भाव चतुर्दिक फैलाया था, उसने विश्व गुरु और सोने की चिड़िया होने पर भी अपनी सैन्य क्षमता का विस्तार कभी नहीं किया और जो भी उसके पास सैन्य क्षमता थी उसका दुरुपयोग करते हुए साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का अंकुरण नहीं होने दिया। यही विश्व गुरु का धर्म था और इसीलिए वह विश्व कल्याण में अनेक सांस्कृतिक उपादान दे सका। आज शक्तिशाली राष्ट्रों का भी यही धर्म होना चाहिए।

यद्यपि इसके दुष्परिणाम भी भारत को भोगने पड़े और अनेक आक्रांताओं ने इसे उसकी कमजोरी समझा, परिणाम स्वरुप भारत को 700 वर्षों की गुलामी झेलनी पड़ी जिसने उसके विश्व गुरु के पद को कमजोर, गरीब, असहाय और उपभोक्तावादी राष्ट्र के रूप में बदल दिया, किंतु पुनः परिस्थितियां बदली हैं। आज का भारत सशक्त है और उसने अंतरिक्ष अनुसंधान, फार्मास्यूटिकल, आभूषण, रेडीमेड वस्त्र, सूचना प्रौद्योगिकी, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धि अर्जित की है। भारत ने 2017 में ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (PSLV) के माध्यम से एक ही मिशन में 104 उपग्रह अंतरिक्ष कक्षा में स्थापित करके विश्व में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। भारत ने चंद्रयान-3 के माध्यम से दक्षिणी ध्रुव पर अपना कदम जिस सफलता से रखा, यह विश्व के वैज्ञानिकों के लिए एक आश्चर्य का सुखद क्षण था, क्योंकि इसके पूर्व तक विश्व का कोई भी मिशन चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर नहीं पहुंचा था। इसी प्रकार भारत ने अपने ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (PSLV) के द्वारा जिस मितव्ययता के साथ मंगल मिशन को सफलतापूर्वक संपन्न किया है, उससे वह एशिया का पहला और पहले ही प्रयास में यह उल्लेखनीय उपलब्धि अर्जित करने वाला विश्व का पहला देश बन गया, जो भारत की बढ़ती हुई अंतरिक्ष शक्ति का ही द्योतक है, इतना ही नहीं इसरो ने मंगलयान और चंद्रयान की सफलता जिस मितव्ययता और कुशलता से प्राप्त की है, उसका लोहा विश्व के वैज्ञानिक मानने के लिए बाध्य हुए हैं। चूंकि भारत के उपग्रह प्रक्षेपण यान कार्यक्रम की लागत विश्व के समस्त देशों की तुलना में अत्यधिक कम है, इसी के परिणामस्वरूप भारत ने विश्व के 40 से अधिक देशों के 300 से अधिक कृत्रिम उपग्रहों का अंतरिक्ष की कक्षा में सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया है और आज विश्व का सबसे मितव्ययी पहुंच वाला **अफॉर्डेबल स्पेस लॉन्च हब** बन चुका है। इतना ही नहीं भारत आज अंतरिक्ष में मानव भेजने की क्षमता रखने वाले विश्व के चुनिंदा देशों की कतार में शामिल हो गया है।

यद्यपि हम प्राचीन काल से ही सोने की चिड़िया और विश्व गुरु के रूप में जाने जाते रहे हैं, किंतु 700 वर्षों की गुलामी ने हमारे इस सुनहरे अतीत को धूमिल कर दिया था। यद्यपि भारत आजादी के बाद भी शांतिप्रिय देश रहा है और उसने अपनी विदेश नीति में पंचशील और गुटनिरपेक्ष जैसे सिद्धांतों को अपनाने की इच्छा शक्ति व्यक्त की और दूसरे राष्ट्रों से भी इन नीतियों का सम्मान करने के लिए आग्रह किया। फिर भी चीन और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी अभिमानी राष्ट्रों ने उनका सम्मान करने के स्थान पर भारत की पीठ पर खंजर भोकने का काम किया है, जिसका एकमात्र कारण तत्कालीन भारत की सैन्य कमजोरियां थीं उस समय भारत की सकारात्मक और शांतिप्रिय नीतियों को उचित सम्मान प्राप्त नहीं हुआ, 21वीं सदी का भारत एक नए प्रकार का सशक्त, सक्षम और सामर्थ्यवान भारत

है, उसने विकास के नए सोपान प्राप्त करने प्रारंभ कर दिए हैं, ऐसे में भारत की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है और उसकी बात का बजन भी। आज विश्व के अनेक देशों के द्वारा यह मांग की जा रही है कि भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता वीटो पावर के साथ प्राप्त होनी चाहिए, जिसका प्रमुख आधार भारत की विश्व के शांति अभियानों में की गई सक्रिय और सराहनीय सहभागिता है। वास्तव में उक्त अभियान भारत को सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त आधार हैं। जब फरवरी 2022 में रूस-यूक्रेन युद्ध प्रारंभ हुआ तब यूक्रेन में फंसे हुए अपने हजारों भारतीयों को ना केवल सुरक्षित वापस लाने में सफल हुआ, बल्कि भारत ने अपने झंडे तले विश्व के अनेक देशों के नागरिकों को भी ससम्मान युद्ध की विभीषिका से बाहर निकाला, जो भारत की बदली हुई तस्वीर को स्पष्ट रूप से बयां कर रहा है। यूक्रेन जैसे देशों के द्वारा बार-बार यह दोहराया जा रहा है कि भारत यूक्रेन-रूस युद्ध में मध्यस्थता करके शांति स्थापित करने में अहम भूमिका निभा सकता है। दुनिया का यह विश्वास भारत की बढ़ती हुई सैन्य शक्ति का ही परिचायक है। आज दुनिया के प्रत्येक घटनाक्रम में भारत की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहभागिता और उपादेयता देखी जा सकती है।

जब कोविड-19 महामारी के दौरान संपूर्ण विश्व वैक्सीन की अनुपलब्धता के गंभीर संकट से गुजर रहा था तब ऐसे में भारत ने ना केवल अपनी जरूरत की वैक्सीन अपने नागरिकों को उपलब्ध कराई बल्कि अपने विश्व गुरु की जिम्मेदारी को समझते हुए मानवता की अद्भुत मिसाल पेश की और 20 जनवरी 2021 को **कोविड-19 वैक्सीन मैत्री अभियान** का श्री गणेश किया जिसके अन्तर्गत विश्व के गरीब और जरूरतमंद राष्ट्रों को जिस प्रकार से मदद की, उससे प्राचीन भारतीय उपादेयता की यादें पुनः ताजा होने लगी। भारत ने 100 से अधिक देशों को 14 करोड़ वैक्सीन उपलब्ध कराई। जिसमें उपहार के रूप में लगभग 1.07 करोड़, वाणिज्यिक बिक्री के रूप में लगभग 3.6 करोड़ और COVAX कार्यक्रम के अंतर्गत 9 करोड़ से अधिक डोज उपलब्ध कराकर अपनी संस्कृति और सोच की सकारात्मक उपादेयता का प्रमाण प्रस्तुत किया। भारत द्वारा जिन राष्ट्रों को वैक्सीन मैत्री अभियान के अंतर्गत लाभ पहुंचाया गया उनमें प्रमुख हैं भूटान, नेपाल,, श्रीलंका, मालदीव, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, म्यांमार, मॉरिशस, जमैका, डोमिनिका, बारबाडोस, अफ्रीकी देश, सेशेल्स, ब्राज़ील, दक्षिण अफ्रीका, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात , कनाडा, कैरीबियन देश, मोरक्को, आदि। उक्त अभियान के आधार पर भारत दुनिया के लिए भरोसेमंद वैक्सीन आपूर्तिकर्ता राष्ट्र बना। भारत का यह अभियान उसके अतीत को पुनर्जीवित करने वाला सिद्ध हुआ, क्योंकि भारत ने प्राचीन काल से ही विश्व को कुछ ना कुछ दिया है। इस अभियान में भारत की नेतृत्व क्षमता, मानवीय संवेदना, वैज्ञानिक दक्षता, विश्वशनीयता और मानवता प्रथम के उद्देश्य को सार्थक कर दिया, भारत एक बार पुनः विश्व मित्र के रूप में स्थापित हुआ।

समीक्षा :

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि भारत प्राचीन काल में जिस विकसित अवस्था में था, उसमें विश्व गुरु होने का भाव और दायित्व होना स्वाभाविक था, किंतु भारत सदैव से ही ऐसा ही विकसित और विश्व गुरु के रूप में नहीं रहा, बल्कि 700 वर्षों की गुलामी ने उसके आत्मविश्वास को खंड-खंड कर दिया और ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान भारत का एक बड़ा वर्ग यह मानने लगा कि भारत हमेशा से ही अंधविश्वासी, अवैज्ञानिक और अतार्किक संस्कृति वाला देश रहा है। अर्थात वह अपने अतीत के सुनहरे पलों से लगातार ओझल होता चला गया, किंतु जैसे ही

उपनिवेशवादी निद्रा टूटी तो वह पुनः विकास की अंगड़ाई लेने लगा और अब लगातार विकास के मार्ग पर अग्रसर है, और एक अनुमान के अनुसार भारत बहुत ही जल्दी विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के साथ ही विश्व की शांति व्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का एक बहुत बड़ा जिम्मेदार और भागीदार राष्ट्र बनेगा, यही उसकी सच्ची विश्व उपादेयता होगी।

संदर्भ ग्रंथ :

- ठाकुर डॉ प्रेरणा और महाजन दिनेश, भारतीय ज्ञान परंपरा प्रबुद्ध भारत, अनुराधा प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2025
- गौड़ डॉ रामशरण, भारतीय ज्ञान परंपरा, अनिल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2025
- शर्मा भगवती प्रकाश, कालजयी भारतीय ज्ञान, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 2024
- शर्मा, रामशरण भारत का प्राचीन इतिहास (चौथा हिंदी संस्करण 2019) ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली
- अग्निहोत्री, डॉ वी के अग्निहोत्री, भारतीय इतिहास (तृतीय संस्करण,1998) एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड नई दिल्ली
- श्रीवास्तव डॉ कृष्ण चंद्र, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति (2004 नवीन संस्करण), यूनाइटेड बुक डिपो 21, यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद 211002

Research Hub International Journal